D.El.Ed 2nd Sem

Date - 9/09/2020 Wednesday

Sub - Present Indian society and elementary education

Topic - Primary education before Independence

स्वतन्त्रता से पूर्व प्राथमिक शिक्षा

'अंग्रेज शासकों' ने 'एक शताब्दी' तक शासन किया। परन्तु 'अनिवार्य शिक्षा' की भारत में 'कोई प्रगति' न हो सकी। अनेक 'विद्वानों' एवं 'समाज-सुधारकों' ने सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया।

कुछ 'भारतीय विद्वानों' ने ही नहीं, 'अंग्रेजी विद्वानों' ने भी 'अनिवार्य शिक्षा' में योगदान दिया। इसका विवरण निम्नप्रकार है —

1. 'विलियम एडम्स' ने 1838 में रिपोर्ट दी — इसमें शिक्षा के अनिवार्य बनाने पर बल।
2. कैप्टन विंगेट 1852 — 'अनिवार्य शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता पर बल।'
3. टी.सी. होप — अनेक विद्यालय खोलने के लिए कानून बनाया।
4. सन् 1890 — भारत में राष्ट्र चेतना की जागृति। भारतीयों का ध्यान स्वतः इसकी ओर गया। अनेक प्रयत्न किये गये।
5. बड़ौदा नरेश → ने सम्पूर्ण रियासत में अनिवार्य शिक्षा लागू सन् 1906।
6. गोपालकृष्ण गोखले का बिल सन् 1910 — 6-10 वर्ष तक छात्रों के लिए अनिवार्य शिक्षा का प्रस्ताव। परन्तु यह 'बिल पास न हो' सका।
7. सार्जेण्ट आयोग सन् 1944 — प्राथमिक शिक्षा के सम्बंध में योजना बनायी, परन्तु 'कार्यान्वित' न हो सकी।

इनमें सबसे सराहनीय व अग्रणीय कार्यकर्ता 'गोपाल कृष्ण गोखले' तथा 'सयाजीराव गायकवाड़' थे।

विस्तृत विवरण

1- महाराज सयाजीराव गायकवाड़ के प्रयास — (बड़ौदा नरेश) ने अपने राज्य की प्राथमिक शिक्षा के लिए अनेक प्रयत्न किये। ब्रिटिश सरकार — 'स्तम्भित' 'मार्च 1892' में उन्होंने एक राजाज्ञा घोषित की। अमरेली नगर के

29/04/2020

Amis Pro – Sapna Tyagi
B.R.C. Deoband

के 'नौ ग्रामों में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य'।

राजाज्ञा के अनुसार — 7-10 वर्ष के समस्त बालक-बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय में प्रवेश लेने की बाध्यता। फलस्वरूप (प्रारम्भिक प्रयासों की सफलता) ने इसे 52 ताल्लुकों में अनिवार्य बना दिया। निरन्तर '15 वर्षों तक इस प्रयोग को बनाये रखने के बाद 1906 में एक अधिनियम बनाकर अनिवार्य शिक्षा को सम्पूर्ण बड़ौदा राज्य में लागू कर दिया। 'बड़ौत नरेश' के ये प्रारम्भिक प्रयास भारतीय प्राथमिक शिक्षा के इतिहास में अत्याधिक ~~सराहनीय~~ स्तुतीय हैं।

गोपाल कृष्ण गोखले का प्रस्ताव 1910